खण्ड तीन (रामकथा खण्ड)

(स) देश–विदेश में राम संस्कृति का प्रभावः शोध की असीमित सम्भावनायें

(स)1. वाल्मीकि रामयण में वर्णित रामवनगमन मार्ग

वाल्मीकि रामयण तथा अन्य ग्रन्थों में रामवनगमन का विषद विवेचन किया गया है। राम को जिस दिन राजगद्दी प्राप्त होने वाली थी उसी दिन उन्हें 14 वर्ष के लिये वनवास हुआ। वनवास की अवधि में श्रीराम ने जंगल में अति सामान्य जातियों को सुसंगठित और सुसंस्कारित किया जिससे रावण जैसे शक्तिशाली अधिनायग का अन्त हो सका। राम के वन प्रवास का वर्णन लोक जीवन से लेकर शिष्ट समाज तक अनेक रूपो में हुआ है। यह वर्ण अनेक बार होने के पश्चात आज भी अपने आप में नई स्फूर्ति एवं ताजगी वाला है। सच्चे अर्थों में यह कहा जाना उचित होगा कि यदि राम ने वन प्रवास न किया होता तो राम महामानव से उठकर आराध्या की श्रेणी में नहीं पहुँच सकते थे। राम के वनगमन क्षेत्रों का विस्तृत सांस्कृतिक सर्वेक्षण भारत की राष्ट्रीय एकता को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर सकते है। राम ने दो वनगमल किया–

1. महर्षि विश्वामित्र के साथ बिहार और जनगपुर तक?
2. 14 वर्ष वनवास की अवधि में चित्रकूट, पंचवटी, दण्डकारण्य, किष्किंधा से रामेश्वरम् से श्रीलंका तक।

वाल्मीकि रामायण में राम वनगमन के जिन क्षेत्रों का वर्णन किया गया है उसका एक संक्षिप्त मानचित्र संलग्न है।

(स)2. भारत के अन्य प्रदेशों में राम–कथा संस्कृति का प्रभाव

अयोध्या के राजा श्रीराम ने राजमहल से निकलकर सामान्य जन के लिये जो संघर्ष किया उसकी कीर्ति चारों दिशाओं में फैली जिसने भारतवर्ष के सभी प्रदेशों को गहरे तक प्रभावित किया। श्रीराम का आदर्श एवं लोक मंगलकारी रूप न केवल लोक कलाओं के सभी रूपों में अभिव्यक्त हुई अपितु सामान्य जन के आचरण एवं व्यवहार में भी वह प्रतिफलित हुआ। संक्षेप में कुछ राज्यों में इसके प्रभाव का अत्यन्त संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत हैं परन्तु भारतवर्ष के सभी राज्यों में इसके महत्व एवं प्रभाव का मूल्यांकन एवं अन्वेषण नितान्त आवश्यक है।

''राम की अयोध्या राम ही से जानें'' अर्थात अयोध्या ओर राम एक दूसरे के पर्यायवाची है। अयोध्या है। कणकण में राम कथा और राम का व्यापक प्रभाव है। यहाँ का लोक अभिवादन ''जै राम जी'' इसी बात का द्योतक है कि राम लोक मानस में गहरे तक जुड़े हुये है। अयोध्या के अतिरिक्त अन्य लोक संस्कृतियों में श्रीराम की अयोध्या और उसके प्रभाव का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है–

1. मिथिला–

'मिथिलादयश्च मध्यन्ते रिपवो इति मिथिलानगरी'।

अर्थात शत्रुओं को चकनाचूर करने वाली मिथिला नगरी में नेपाल के कुछ क्षेत्रों के साथ पूर्वी–पश्चिमी चम्पारन, सीतामढ़ी, मुजफ्फरनगर, वैशाली, दरभंगा से लेकर किशनगंज तक एवं मधुबनी का क्षेत्र आता है। महर्षि विश्वामित्र द्वारा श्रीराम को चमपारन ले जाया गया था जहाँ, उन्होने ऋषियों को राक्षसों से मुक्ति की, श्रीराम ने जनगपुरी पहुँचकर मिथिला नरेश राजा जनक जी की कन्या सीता से विवाह भी किया, मिथिला के दामाद श्रीराम मिथिला की माटी में रच–बस गये है। मिथिला की लोक चित्र कला मधुबनी में इसके ताजे, टटके एवं मनोहारी चित्र मिलते है। मिथिला के आचार–विचार सब में राम को एक दामा के रूप में आदर और सम्मान दिया गया है। मिथिला की वर्तमान विवाह परम्परा में भी राम कथा के स्पष्ट प्रभाव को रेखांकित किया जा सकता है। मिथिला में पहली बार विवाह होने पर

वर–वधू एक ही कक्ष में आचार–विचार से छः माह तक रहते है, इसी बीच पुनः दूसरी बार बारात आती है और विधिवत विवाह के पश्चात वधू ससुराल पहुँचती है। विश्वामित्र आश्रम से जनक का निमंत्रण पाकर राम अचानक जनपुरी पहुँचे, धनुष भंग किया और विवाह हो गया परन्तु अयोध्या नरेश राजा दशरथ को यह सूचना बाद में प्राप्त हुई इसीलिये वह बारात लेक विधिवत विवाह हेतु छः माह बाद पहुँचे यही मान्यता आज भी मिथिला के लोक अंचल में राम कथा को जीवित किये हुये है। जनकपुर में अयोध्या की भाँति ही मन्दिर, सरोवर, नदियाँ, कूप और बावड़ियाँ है जिसमें राम कथा रची–बसी है। सीतामणि, पुनौरा, धनुषार, संग्गागांव, जगवन, पंपाकर, वाल्मीकि नगर, अहिल्या स्थान आदि महत्वपूर्ण स्थान है। वाल्मीकि नगर जिसे भैंसालोटन भी कहा जाता है। परित्क्त्य सीता की शरणस्थली है। मिथिला में बिखरी राम कथा के सांस्कृतिक तत्प विषद पुरातात्विक अन्वेषण की असीम सम्भावना रखते हैं।

2. बुन्देलखण्ड–

बुन्देलखण्ड अंचल मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में विभाजित है। जिसका संक्रमण क्षेत्र चित्रकूट है। चित्रकूट राम कथा का महत्वपूर्ण केन्द्र है। मान्यतानुसार राम ने 11 वर्ष से अधिक बनवास का समय चित्रकूट में व्यतीत किया। यहाँ पुलिन्द, भंवर, निषाद, दाण्डी आदि आर्येतर जातियों का प्रभाव था। महाकवि कालीदास ने मेघदूत में चित्रकूट के रामगिरि आश्रम को प्रसिद्ध राम तीर्थ कहा है। रामचरित का मूर्तिकला में सर्वप्रथम अंकन पन्ना जिले के नचना गांव में झांसी के देवगढ़ के विष्णु मन्दिर में प्राप्त हुआ है। देवगढ़ के रामायणी दृश्यों की रचना में राम सुग्रीव मित्रता की कलात्मक प्रस्तुति राम कथा के व्यापक प्रभाव का एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। विष्णु के अद्भुत रूप पर आधारित मूर्ति कलाओं की श्रृंखला बुन्देलखण्ड में प्राप्त होती है। चंदेल राजाओं ने शैव मत के साथ ही साथ शाक्य एवं वैष्णव मत को भी संरक्षित किया है। चंदेल राजाओं में वैष्णवों में विष्णु को प्रमुखता दी। राम दशावतार अंकन में आये। चंदेल कालीन सिक्कों में हनुमान की मूर्ति प्राप्त होती है। कालिंजर दुर्ग का पांचवॉ द्वार हनुमान द्वारा है। खजुराहों में भी हनुमान जी की एक बड़ी मूर्ति है। चंदेलों के बाद तोमरो ने भी राम कथा को महत्व प्रदान किया है। ओरछा के राज राम और अयोध्या के राम एक ही माने गये है। 1550 ई0 से लेकर 1600ई0 के बीच ओरछा राम भक्ति का प्रमुख केन्द्र थी उनके नरेश मधुकर शाह बुंदेला के बारे में प्रसिद्ध है कि जब अकबर ने तिलक लगाकर दरबार में आने पर गर्म लोहे की सलाख से दागने की घोषणा तब मधुकर शाह बुंदेला जी ने और अधिक मोटा तिलक लगाकर दरबार में प्रवेश किया। कहा यही जाता है कि अकबर इस घटना से बहुत अधिक प्रभावित हुआ हौर उसने मधुकर शाह बुंदेला को मधुकर शाही टीका कहे जाने की आज्ञा प्रादान की।

बुंदेलखण्ड की राउत लोगों में राम कथा पर आधारित लोक नाट्य प्राप्त होते है। बुंदेलखण्ड का एक प्रसिद्ध नृत्य है दीवारी नृत्य। दीपावली के दिन यादव समुदाय के लाग हाथ में बड़ी–बड़ी लाठियां लेकर जुलूस की शक्ल में चित्रकूट पहुँचते है और कामदगिरी श्रृंखला के समीप विशाल मैदान में शस्त्र प्रदर्शन का विशाल आयोजन किया जाता हैं यदि नाम पर ध्यान दिया जाये तो 'दीपावली–नृत्य बुंदेलखण्ड की किसी भी घटना या प्रसंग पर आधारित नहीं हैं जबकि यह उस कथा पर आधारित प्रतीत होती है, जो दीपावली के दिन राम के अयोध्या पहुँचने से है। राम का 11 वर्ष से अधिक समय चित्रकूट में व्यतीत हुआ अतएव जब राम दीपावली के दिन अयोध्या पहुँचे तो उनके जंगल के ग्रामीण साथ उत्साह में शस्त्र प्रदर्शन का यह मनोहारी नृत्य करते है।'

महाकवि तुलसीदास जी ने भी चित्रकूट के घाट पर बैठकर रामचरितमानस की रचना की। बुंदेलखण्ड में राम कथा पर आधारित लोग गीतों, लोक नाट्यों लोक चित्रों की सुदीर्घ परम्परा विद्यमान है। कालपी में रावण स्तम्भ मन्दिर है जिसमें रावण को नायक मानकर अद्भुत चित्रकारी की गयी है। इन चित्रों पर भी अत्यधिक शोध की सम्भावनायें है।

3. **ब्रज–** ब्रज यद्यपि कृष्ण केन्द्रित क्षेत्र रहा है, परन्तु ब्रज भूमि से राम कथा का भी ऐतिहासिक संबंध रहा है। वैष्णव भक्ति में रामावतार को पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। आलावर सन्तों के द्वारा प्रवाहित की गयी वैष्णवी भक्ति की धारा जिसके श्री सम्प्रदाय प्रवर्तकआचार्य रामनुज हुये उन्होंने ब्रज में वैष्णव धर्म को प्रतिष्ठित किया। वृन्दावन का श्रीरंगा जी मन्दिर, राम की आस्था एवं विश्वास का अमिट केन्द्र है। ब्रज क्षेत्र की राम लीलायं अद्भुत एवं मनोहारी है जिसका दस्तावेजीकरण किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।
4. **राजस्थान–** राजस्थान की चित्रकला में मुगल काल से श्रीराम की कथा पर आधारित चित्रांक प्राप्त होने लगे है। सम्राट अकबर ने रामयण का अनुवाद भी कराया। मेवाड़ शैली में रामायण का अद्भुत चित्रांकन प्राप्त होता है। मेवाड़, काटा, बूंदी, किशनगढ़, बीकानेर, अलवर, जयपुर आदि की शैलियों में राम चरित मानस एवं वाल्मीकि रामायण के आधार पर उत्कृष्ट चित्र बनाये गये है। राजस्थान में श्रीराम की स्वतंत्र मूर्ति प्राप्त होती हैं महाराणा कुम्भा ने चित्तौड़गढ़ में राम, लक्ष्मण की मूर्तियाँ स्थापित की है। राजस्थान के लोक गीतों में भी राम कथा का वर्णन प्राप्त होता है। राजस्थान की विभिन्न लघु चित्रशैलियों में राम कथा का प्रस्तुतीकरण संग्रहणीय एवं शोध की सम्भावनाओं से युक्त है।
5. **मणिपुर–** मणिपुर भारत की पूर्वी सीमा पर स्थित है। पर्वतीय क्षेत्र में फैली मणिपुर की संस्कृति के बारे में विभिन्न विचारधारायें प्राप्त होती है। मणिपुर के नामकरण के सन्दर्भ में शिव की लीला से सम्बंधित एक मिथकीय उल्लेख प्राप्त होता है। भगवान विष्णु की आज्ञा से शिव जी पार्वती के साथ रासलील का आयोजन किया। मणिपुर प्रसिद्ध लोक नृत्य 'लाई हरोबा' (देवताओं की प्रसन्नता का नृत्य) आज भी मणिपुर में प्रचलित है। मणिपुर शैव एवं शाक्त पृष्ठभूमि का प्रदेश है, परन्तु वहाँ वैष्णव भक्ति का सूत्रपात भी हुआ। सन् 1467 ई0 में मणिपुर के राजा कियाम्बा को, वर्मा (पोंग) के राज खेखोम्भा के द्वारा विष्णु विग्रह दिये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है। मणिपुर के महाराजा गरीब निवार ने रामानंदी सम्प्रदाय का मणिपुर में व्यापक प्रचार–प्रसार करवाया। उनके वैष्णवीकरण के परिणाम स्वरूप रामायण की कथा मणिपुर में अत्यन्त लोक प्रिय हुई। शिलालेखों में राम–राम शब्द मिलता है तथा हनुमान एवं राम–सीता की मूर्तियां भी प्राप्त हुई है। मणिपुर के जीवन में रामानन्दी सम्प्रदाय का अत्यधिक प्रभाव मिलता हैं दशहरे का दिन मणिपुर में रामणकाप्पा (वध) का दिन कहलाता है तथा दीपावली का त्योहार कार्तिक की अमावस्या को मनाया जाता है, जिसमें राम के अयोध्या लौटने की घटना ही प्रमुख है। गरीब निवाज द्वारा 1709–1748 ई0 के बीच दो सिक्के जारी किया जिनमें 'जै श्रीराम' देवनागरी लिपि में अंकित है। रामायण लोक नाट्य परम्परा के साथ ही साथ रामलीला परम्परा का भी प्रादर्भाव मणिपुर में हुआ। इस प्रकार कुल मिलाकर अयोध्या से अत्यन्त सुदूर क्षेत्र होने के बाद भी अयोध्या की राम कथा मणिपुर के जीवन एवं संस्कृति के साथ उसकी कला को प्रभावित करती रही है।
6. **असम–** असम का प्राचीन नाम 'प्राग्योतिषपुर' है जिसे बाद में 'कामरूप' कहा गया है। कालिका पुराण में यह मान्यता है ब्रह्मा ने नक्षत्रों की रचना यही की थी। असम का अर्थ है 'अनुपम', एक मत इसे 'असमान' तथा या 'ऊबड़–खाबड़' से भी मानता है। असम में आदिम द्रविड़ एवं मंगोलियन जाति के लोगों का प्रभाव मिलता है। प्राचीन असम शाक्त क्षेत्र था जिसके साथ शैव मत भी प्रचलित रहा। 13–14वीं होती है। असम में राम कथा का प्रभाव उनकी लोक संस्कृति में, काव्यो में, लोक नाट्यों में, चित्रकलाओं में तथा भजनों में प्राप्त होता है। परवर्ती असमियां साहित्य में राम कथा का सूक्ष्म

विवरण है। असम के सांस्कृतिक जीवन में राम का आदर्श भौतिकवादी, तनाववादी, युग में भी यह मुक्ति का एक प्रयास है। राम मंदिरों की स्थापना, लोक नाट्य एवं भजनों के माध्यम से राम के आदर्श रूप की स्वीकारोक्ति असम की विशेषता है।

7. **उत्कल (उड़ीसा)–** उड़ीसा में तुलसीकृत राम चरित मानस के आधा दर्जन से अधिक अनुवाद प्राप्त होते है। गांवों में हनुमान जी के मंदिर और राम लीलाओं के मंचन के साथ ही राम चरित मानस का गायन भी किया जाता है। जगन्नाथ पुरी में राम नवमी की परम्परा लम्बे समय से प्राप्त होती है। रामानुज सम्प्रदाय का सबसे बड़ा मठ, 'एमार–मठ' यही है। दण्डकारण्य में राम, लक्ष्मण एवं सीता का वनवास हुआ और इसी अवसर पर तीनों जगन्नाथपुरी पहुँचे। यही प्रसंग एवं कथा उड़ीसावासियों को राम कथा से गहरे तक जोड़ती है। उत्कल की कला में फूल–पत्तियों के साथ ही साथ राम सुन्दर चित्रण किया गया है परन्तु कालांतर में भित्त चित्रों से विकसित होकर कपड़े की पट्टी शैली का अद्भुत विकास हुआ जो उड़ीसा की एक समृद्ध परम्परा बनकर उभरी इनमें पौराणिक प्रसंगो के साथ ही साथ राम लीला की एक विशिष्ट शैली विकसित हुई। पुरी के समीप कलाकारों के एक गां में इन पट्ट शैलियों को बनाने वाले हजारों चित्रकर आज भी इस परम्परा को अक्षुण्य बनाये हुये है। उड़ीसा में ताड़ के पत्तों पर लिख पोथियों का अप्रतिम भण्डार है। राज्य संग्रहालय उड़ीसा के भुवनेश्वर स्थित संग्रहालय में ताड़ के पत्तों पर राम कथा के दृश्यों का एक विशाल संग्रह भी मिलता है। राम लला के मुखौटे उड़ीसा में बहुतायत गावों में प्राप्त होते है। राम लीलायें यहाँ अत्यन्त श्रद्धा और उल्लास से खेली जाती है।

8. **कर्नाटक–** कर्नाटक भारतीय संस्कृति का एक समृद्ध प्रदेश है। कर्नाटक के लोगों के नाम रामप्पा, रामय्या, रामण्णा, रामचन्द्रय्या, रामचन्द्रप्पा रामचन्द्र राव, रामराव, सीतम्मा, सीताबाई, हनुमंतप्पा, हनुमंत, हनुमंत राव, हनुमंत राय आदि प्राप्त होती है जिस पर राम कथा और उनके पात्रों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। कर्नाटक संगीत भी हिन्दुस्तान भी एक प्रमुख संगीत परम्परा है। जिसमें राम प्रिय एवं रघुप्रिय जैसे राग प्राप्त होते है। कन्नड़ के बालगीतों में, संस्करों में ओर उनके शिलालेखों में भी राम कथा का संकेत प्राप्त होता है। कन्नड़ राम कथा परम्परा की हिन्दू और जैन परम्परा दोनों धाराओं में राम के आदर्शों का प्रभाव परिलक्षित होता है। कन्नड़ लोक जीवन में सर्वाधिक स्वीकृत यक्षगान नाट्य शैली प्रमुखतः राम कथा पर ही आधारित है। 18वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में पारतिशुब्ब यक्षगान के प्रसिद्ध रचयिता थे जिन्होने पंचवटी, सीता कल्याण, बालि संहार, सेतुबंधन, कुम्भकरण युद्ध आदि की रचना की। धीरे–धीरे यक्षगान की परम्परा अत्यन्त विकसित एवं प्रचारित हुई। कर्नाटक के उडुपी जिले को यह श्रेय जाता है कि उसने अपने कई यक्षगान केन्द्रों में राम कथा का सजीव मंचन किया है। वर्तमान में यक्षगान केन्द्रों द्वारा कठपुतलियों के माध्यम से भी राम कथाओं का मंचन हो रहा है।

9. **तमिलनाडु–** तमिलनाडु के घर घर में राम कथा या राम का नाम अत्यन्त प्रिय है। तमिलनाडु के नामकरण संस्कार में राम नाम का व्यापक प्रभाव है। कल्याणरामन्, पट्टाभिरामन, सीतारामन, जानकीरामन, रामब्रह्म, शिवरामन, सेतुरामन, रामरत्न, रामराज, रामलिंगम, रामनाथम, रामसुब्रहाण्यम, शिवरामन, रामकृष्णन, तुलसीरामन्, सुन्दररामन, रामन, अभिरामन, जयरामन् आदि नाम आर्थिक समन्वय की दृष्टि से तमिलनाडु में स्वीकार्य है। रामेश्वरम, की यात्रा अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास से की जाती है। तमिलनाडु शैव एवं वैष्णव धर्म के समन्वय का प्रमुख केन्द्र है। यद्यपि तिरसठ नायनमारों द्वारा लिखे गये शिवपुराणों की धरती तमिलनाडु प्रमुखतः शिव की जी लीलास्थली है परन्तु वैष्णव भक्ति का साहित्य भी तमिलनाडु में प्रचुरता से प्राप्त होता है। उत्तर भारत की तहर तमिलनाडु में रामलीला के अन्त में रावण,

कुम्भकरण या मेघनाथ का पुतला दहन नहीं होता परन्तु दशहरे के समय रामायण का पाठ अवश्य होता है। तमिलनाडु में हनुमान की पूजा एवं सुन्दरकाण का वाचन भी बड़ी श्रद्धा से किया जाता है। तमिलनाडु के जीवन में उनके लोक आदर्श में राम के आदर्श उनके अपने आदर्श बन गये हैं।

तमिलनाडु साहित्य में 6–10वीं शताब्दी तक का काल भक्ति काल माना जाता है जिसमें विष्णुभक्त (आलावार) व शिव भक्त (नयनमार) कहे गये। शिवभक्तों (नयनमारों) द्वारा भी राम कथा के अंशों को भी अपनी कथा में सम्मिलित किया गया। **'कम्ब–रामायण'** तमिलनाडु का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। कम्ब दक्षिणी तमिलनाडु के प्रमुख कवित थे जिनके पूर्व तमिलनाडु में किसी भी महाकाव्य की कोई परम्परा नहीं मिलती है। इसके पूर्व तिरूवल्लुवर की नीति संबंधी रचनायें प्राप्त हुई है। महाराजा शिवि (चोल वंश) द्वारा अपने शरीर के मांस को काटकर कबूतर की रक्षा किये जाने के प्रसंग ने महाकवि कम्ब को आधार बनाकर **'रामावतारम्'** महाकाव्य की रचना कर सके। वाल्मीकि के रामायण और कम्ब के रामायण में उत्तर और दक्षिण भारत की संस्कृतियों के मर्म का वसूली अन्तर प्राप्त होता है। कम्ब की रामायण को आधार बनाकर तमिलनाडु की सांस्कृतिक विरासत के शोध एवं सर्वेक्षण की व्यापक सम्भावनायें है।

तमिलनाडु में बहुत अधिक प्राचीन मंदिर है, जो स्थापत्य, जिसकी स्थापना और मूर्तिकला के अद्भुत नमूने है। मिथक के अनुसार श्रीराम ने जिन दो मंदिरों का निर्माण कराया था, संयोग से दोनों मंदिर तमिलनाडु में है एक मंदिर विश्वविश्यात रामेश्वतरम् का **'रामनाम मंदिर'** है दूसरा कन्याकुमारी जिले में **'राघवेश्वर का मंदिर'** है।

तमिलनाडु में आज भी प्रत्येक शुभ कार्य का प्रारम्भ 'श्रीरामजयम्' लिखकर किया जाता है। 'श्रीरामजयम्' लिखने की एक बड़ी सुदीर्घ परम्परा प्राप्त होती है। यद्यपि अयोध्या से तमिलनाडु अत्यन्त दूर है और एकदम दक्षिणी कोने पर स्थित है फिर भी राम के बिना तमिल संस्कृति की कल्पना किया जाना अत्यन्त कठिन और दुष्कर कार्य है।

10. **केरल–** केरल मुख्यतः द्राविड़ देश है, जिसकी मूल संस्कृति द्राविड़ संस्कृति कही जाती है। शैव भक्ति, द्राविड़ संस्कृति की देन है। केरल में देवताओं की अपेक्षा देवी मंदिर अधिक है। केरल के इटुक्की, कोट्टायम जिलों के आदिवासी अपने को मुनि गौतम ओर उनकी पत्नी अहिल्या से उत्पन्न सन्तान के रूप में मानते है, इसी प्रकार मलयर नाम आदिवासी जातियां भी सुपर्णखा की सन्तान परत्परा से अपने आज को जोड़ती है।

केरल में राम कथा पर आधारित सांस्कृतिक प्रभाव 5–6वीं शताब्दी के आस–पास प्राप्त होने लगता है। अद्वैतवाद के जनक आयार्य शंकर का अभ्युदय इसी समय केरल में हुआ। आचार्य शंकर एक युग प्रवर्तक दार्शनिक एवं सांस्कृतिक नेता भी थे। उन्होने केवल एकांगी धर्म प्रचार ही नही किया अपितु राष्ट्रीय एकता की भावना को भी प्रचारित किया। सच्चे अर्थो में आचार्य शंकर ने सभी की स्तुतियों के साथ **'एक–ब्रह्म'** की परिकल्पना की। आयार्य शंकर द्वारा भारत के चारों कोनों में स्थापित बद्रीनाथ, द्वरिकापुरी, जगन्नाथपुरी एवं मैसूर को मठ भारतीय सांस्कृतिक एकता के साथ–साथ शैव एवं वैष्णव धर्म की एकता के भी प्रतीक बने। आज भी इन मंदिरों में केरल के नम्बूदरी ब्राह्मण पुजारी है।

आलावार संतो के प्रसिद्ध कवि कुलशेखर जी केरल के ही थे जिन्होंने केरल में राम भक्ति की धारा प्रवाहित की है। केरल के लोक जीवन पर राम के आदर्श स्वरूप की अमिट छाप पड़ी। मलयालम साहित्य में राम कथा का प्रभाव उनके लोक गीतों से होकर आया। राम के नाम, रूप एवं उनके गुण केरल के लोगों को अत्यन्त आकर्षित करते रहते है। राम भक्त मंडलियां स्थानों और व्यक्तियों के नाम इसके प्रमाण है। केरल में श्रीराम के अत्यन्त प्रसिद्ध एवं विशाल मंदिर है जिनके स्थापत्य एवं मूर्तिकला पर विशद् शोध कार्यों की सम्भावना है। केरल के मंदिरों में राम कथा पात्रों की

शिलामूर्तियां भित्त चित्रों के रूप में भी प्राप्त होती है। केरल में व्यक्तियों के नाम काच्चुरामन, कन्चुरामन् आदि प्राप्त होते है। स्थानों के नामें में भी रामपुरम् राम नगरी, राम नाट्यपुरा आदि प्राप्त होतें है।

प्राचीन काल से केरल की लोक कलाओं में पुतुल कला में चमड़े की पुतलियों द्वारा राम कथा का मंचन होता रहा है। राम कथा को गाकर जीविका चलाने वाली एक विशेष जाति 'पण्डारण' केरल में पायी जाती है जो छोटे–छोटे वाद्य यंत्रों के द्वारा लोक शैली में राम कथा का गायन करते है।

केरल की महत्वपूर्ण कला कथकली राम कथा की अत्यन्त ऋणी है। कृष्ण कथा को आधार बनाकर कृष्णनाट्यम विकसित हुआ जो कथकली में राम कथा के रूप में देखने को प्राप्त होते है।

(स)3. विदेशों में राम कथा संस्कृति का प्रभाव

दूसरे देशों में राम कथा संस्कृति का प्रभाव दो प्रारूपों में दिखाई पड़ता है–?

1. इटली आदि यूरोपियन देशों में 5–6वीं शताब्दी ई0पू0 भित्त चित्रों में वाल्मीकि रामयण के प्रसंगों का विस्तृत चित्रण हुआ है यद्यपि भौगोलिक रूप से यूरोप से भारत के अत्यन्त दूर होने के बावजूद रामायण की कथा इटली कैसे पहुँची इसकी जानकारी का हमारे पास अभाव है और यही शोध का विषय भी हो सकता है।
2. पराधीनता की अवधि में अंग्रेजो द्वारा गुलाम बनाकर भारतीय मजदूरों को जिन देशों में भेजा गया उसका उन मजदूरों द्वारा अपने दुःख दर्दों के साथ मात्र रामचरितमानस का साथ रखा जो श्रीराम के वनगमन और आततायी रावण से मुक्ति का संदेश देती थी। यह रामचरितमानस इन देशों के गिरमिटिया मजदूरों के लिये संजवीनी का कार्य करती थी।

विदेशों में राम कथा संस्कृति का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है जिस पर गहन शोध एवं सर्वेक्षण की महती आवश्यकता है। अत्यन्त संक्षेप में कुछ देशो में इसके प्रभाव का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

इटली

इटली के लोगों को रामायण के दृश्यों, चित्रों और प्रसंगो का भली–भाँति ज्ञान था। इटली में 600ई0 पूर्व प्राप्त पटिया, फूलदान और दर्पणों पर जो चित्र मिले है वे रामायण की घटना पर आधारित है। यह आश्चर्य एवं शोध का विषय है कि भारतवर्ष से इतने दूर भौगोलिक विच्छिन्नता के बाद, प्राचीन भारतीय सभ्यता की सूक्ष्म जानकारी 6वीं शताब्दी ई0पू0 के पहले, इटली कैसे पहुँची? भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के श्री के0 राघवचारी द्वारा 10 चित्र व्याख्यापित किये गये है, इनमें कुछ कब्रों से दो तर्कीनिया में पांच सर्वेतेरी में एक चित्रांकित फूलनदान से और दो दर्पणों से प्राप्त किये गये है।

चीन

चीन की सीमा में रामायण का प्रचार तथा प्रभाव तीसरी शताब्दी के आस–पास प्रारम्भ होता है। बौद्ध साहित्य के चीनी अनुवाद में उपलब्ध 251 ई0 में डब्ल्यू0यू0 (222–280) के शासनकाल के **खागशंग हुई** नामक बौद्ध मठाधीश ने अनामट जातक का चीनी भाषा में अनुवाद किया जो कि लिऊ तऊच्च किंग के छठे पारिमिता सूत्र के पांचवे ग्रंथ में 46वीं कहानी है। यह कहानी वाल्मीकि रामायण के मूल कथानक से एकदम मिलती है।

उत्तर की वेईवंश (386–534) के सन् 472 ई0 में 'श्रमण ची–चिया ये' ने 'तान याओ' के साथ मिलकर 'दि निदान ऑफ किंग', 'टेन लक्जरीज' का चीनी भाषा में अनुवाद किया। यह 'त्च पाओ त्चांग–किंग' के प्रथम खण्ड की पहली कहानी है। इस कहानी का आधार भी राम कथा है। उपर्युक्त कथाओं के अतिरिक्त बौद्ध धर्म ग्रन्ध के चीनी अनुवादी से भिन्न अभिलेख भी है, जो रामायण से संबंधित है। रामायण ने बौद्ध धर्म ग्रन्थों के चीनी अनुवाद के साथ मिलकर चीन की ललित कला को अत्यधिक प्रभावित किया।

मंगोलिया

मंगोलिया में राम विषयक कथा की पाण्डुलिपियां 8वीं–10वीं शताब्दी के बीच प्राप्त होती है जो पूर्वी तुर्किस्तान से संबंधित है। तिब्बत से विशाल बौद्ध साहित्य के साथ बहुत सी भारतीय सांस्कृतिक कृतियाँ मंगोलिया पहुँची इसी के साथ राम कथा भी मंगोलिया पहुँची गयी।

मंगोलिया में राजा जीवक विषयक राम कथा लेनिनग्राद में सुरक्षित है। सुभाषित की टीकाओं, क्रिस्टल मिरर नामक इतिहास ग्रन्थ एवं 'ईयर डेकोरेशन' नामक शब्दकोश में राम कथा प्राप्त होती है। तिब्बत में भी सुभाषित की टीका तथा उनकी पाण्डुलिपियों में राम कथा सुरक्षित है। मंगोलियाई रामायण का प्रभाव केवल साहित्य में ही नहीं है अपितु अध्यात्मिक क्षेत्रों में भी है। मंगोलिया में लंगूर की पूजा होना रामायण के हनुमान की पूजा का ही एक रूप है।

सोवियत संघ (रूस)

साइबेरिया के बर्फीले क्षेत्रों में 12–13वीं शताब्दी में मंगोल भाषा में लिखी एक पुस्तक का व्यापक प्रचार हुआ जो रामायण के सारांश पर आधारित थी। कालान्तर में तुर्को और मंगोलों के प्रभाव से यह कथा सरयू और गंगा से निकलकर वोल्गा नदी क्षेत्र तक पहुँची। रूस के महान साहित्यकार लियो टॉलस्टाय ने रामायण के ज्ञान प्रधान एवं उपदेशात्मक कथनों को उद्‌द्यृत किया है। भारत एवं रूस के सांस्कृतिक संबंध को बढ़ाने में रामायण के रूसी अनुसाद ने प्रमुख योगदान दिया है।

रूस में बच्चों व किशोरो की सबसे पुरानी थियेटर कम्पनी **'मास्को थियेटर बाल कम्पनी'** अपने नाटकों के साथ रामायण के प्रदर्शन का कार्य भी करती है। सोवियत संघ में रामायण का प्रदर्शन बच्चों तथा कठपुतलियों के माध्यम से मनोहारी रूप में किया जाता है।

श्रीलंका?

श्रीलंका या सिंघलद्वीप में राम कथा प्राचीन काल से प्रचलित है। सिंघली कवि कुमार दास का महाकाव्य 'जानकीहरण' संस्कृत में लिखा गया उत्कृष्ट ग्रन्थ है। सिंघल में कंकारिया में भी राम कथा का प्रबल प्रभाव मिलता है। श्रीलंका के साहित्य में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते है जिनसे प्रतीत होता है कि राम कथा वहां के जनजीवन में प्रचलित थी। 'महावंश', 'मयूर संदेश', 'कोकिला संदेश,' 'काव्य शेखराय', 'गुट्टिल जातक' आदि ऐसे अनेक ग्रंथ है, जिन पर राम कथा का व्यापक प्रभाव है। श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रचारकों द्वारा प्रचलित जातक कथाओं में **'दशरथ–जातक'** का महत्वपूर्ण स्थान है, जो सिंघली भाषा में लिखी गयी और जिसका श्रीलंका में ही पाली में अनुवाद हुआ। यद्यपि 'दशरथ–जातक' में दशरथ की राजधानी को बनारण बताया गया है और राम का वनवास दण्डकारण्य में नहीं अपितु हिमालय में हुआ था।

इण्डोनेशिया

इण्डोनेशिया में रामायण का व्यापक प्रभाव पड़ा है जो उनकी मूर्तिकला, चित्रकला और नाट्यकला में भी दिखाई पड़ता है। जावा में 1000 वर्ष पुराने महाकाव्य में रामायण का विस्तृत विवरण मिलता है, जिसके तीसरे अध्याय में पाषाण चित्रलिपि की राम कथाओं का वर्णन है। जावा में प्राप्त राजाओं के मकबरों की आधारशिलाओं में रामायण की कथा चित्रित है। पूर्व जावा में चण्डि–पन–तरन नामक मन्दिरों के समूह में रामकथा पाषाण की चित्रावलियों में अंकित है। रामायण की कथा जावा और बली से भी आगे निकलकर हिन्द एशिया की प्रमुख बोलियों में मिलती है। मलयन भाषा के मूल क्षेत्र मलय एवं सुमात्रा में भी इसका प्रभाव है। मलयन राम कथा की एक बहुत बड़ी विशेषता है कि वे लक्ष्मण को बहुत

अधिक महत्व देते है। वे अपने नौसेनाध्यक्षों की उपाधि लक्ष्मण ही रखते है। इण्डोनेशिया की दोनों प्रमुख भाषा और मलयन की भाषा में राम कथा का व्यापक प्रभाव है। उनकी प्रमुख शैली ककविन शैली रामायण से प्रभावित है। इण्डोनेशिया में रामायण के प्रभाव पर भी शोध की असीम सम्भावना है।

थाईलैण्ड

प्राचीन 'स्यामदेश' की परम्परागत अवधारणा के अनुसार उसके देश की संरचना राम कथा के ही आधार पर हुई है। वे रामायण के पात्रों को अपने देश के निवासी स्वीकार करते है। इतना ही नहीं रामायण में वर्णित स्थल भी थाईलैण्ड में मिलते है। थाईलैण्ड में प्रमुख ग्रन्थ 'राम किएन' अर्थात 'रामकीर्ति' का अभिनय किया जाता है जिसमें आमजन के साथ ही साथ राज परिवार के सदस्य भी हिस्सा लेते है। बैंकाक की रंगशीला में प्रस्तुत होने वाली रामलीला अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं कलात्मक है। सच्चे अर्थों में थाईलैण्ड में भारतीय संस्कृति राम कथा के माध्यम से ही पुष्पित पल्लवित हो रही है। थाईलैण्ड में एक शहर का नाम ही अजुध्या है। थाईलैण्ड के बैंका शहर के बौद्ध मन्दिर की गैलरियों में रामकथा का जीवन्त चित्रण हुआ है।

अफ्रीका

अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों में राम संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति के प्रभाव के अन्तर्सबंधों पर शोध एक रोचक एवं महत्वपूर्ण विषय है। इनके मूल निवासियों को नीग्रो कहा जाता है, जो एक जंगली जाति है। भारतीय संस्कृति में संस्कारों का बहुत बड़ा महत्व है इनमें कुछ ऐसे संस्कारों का उल्लेख किया जा रहा है जो अफ्रीका से बहुत अधिक मिलते–जुलते है–

जात–कर्म, अन्न–प्राशन, मुण्डन, मेखला, अन्त्येष्टि, चन्द्रदर्शन, अग्निपूजा, आदर्श विवाह।

अफ्रीका के प्रमुख देशो में कीनिया, युगाण्डा, तंजानिया, मोजाम्बिक, रोडेशिया के साथ ही साथ दक्षिण अफ्रीका हिन्दू संस्कृति और राम संस्कृति को अपने भीतर समेटे हुये है। दक्षिण अफ्रीका के एशियाई लोगों में 68प्रतिशत हिन्दू है। नैटाल प्रान्त में अधिकांश भारतीय मूल के लोग निवास करते है। डरबन में राम रथ की कमेटी और उसका जुलूस राम संस्कृति की स्वीकृति का ही द्योतक है। समस्त उफ्रीकी देशों में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का वर्चस्व है, जो मूल अफ्रीकी लोगों को भी प्रभावित करता है।

मारीशस

मारीशस को सागर के पार लघु भारत भी कहा जाता है। सारी दुनिया में मारीशस अपने परम्परागत प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ ही साथ भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के द्वारा भा प्रसिद्ध है। प्रवासी भारतीयों ने रामचरितमानस को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर राम संस्कृति को जीवित रखा है। रामायण और रामचरितमनास के प्रसंगो और उसकी आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से ही प्रवासी भारतीयों ने मारीशस में अपनी हर चुनौती का सामना किया है। मारीशस में राम कथा का प्रभाव दो रूपों में प्राप्त होता है। एक तो उसके जनजीवन और उसकी संस्कृति पर, दूसरा उनके हिन्दी साहित्य पर। मारीशस के लोग पवित्र नदियो, तीर्थ स्थान, धर्मग्रन्थों आदि पर भारतीयों की भाँति ही श्रद्धा और विश्वास करते है। वे पुनर्जन्म की अवधारणा लोक–परलोक, शगुन–अपशगुन, स्वप्न–विश्वास, मुहूर्त आदि पर भारतीयों की भाँति ही अटूट आस्था एवं विश्वास रखते है। तुलसी का वृक्ष मारीशस मे भारती की भांति ही पूजनीय है। मारीशस वासी भारतीयों संस्कारों की भांति नामकरण, उपनचन, विवाह, अन्त्येष्टि आदि संस्कारों को मनाते है।

मारीशस की कला एवं संस्कृति पर भी राम कथा का व्यापे प्रभाव पड़ा है। मारीशस के लोक गायन, कवि, सभी भारतीय संस्कृति को प्रच्छन्न और संकेत रूप में स्वीकार करते है। तथा राम कथा को अपनी संस्कृति का आधार बनाते है। मारीशस में राम कथा के विभिन्न पक्षों पर शोध की व्यापक सम्भावनायें है।

फिजी

मारीशस की भांति ही फिजी में भी बन्दी बनाकर भारतीय लाये गये थे जिन्होंने अपनी आस्था में रामचरितमानस को आधार बनाया। रामचरितमानस की कथा उनके हर सुख–दुख में साथी रही जो उन्हें जीवन से लड़ने और उसे संवारने में सहायक बनी। फिजी के रामायण में राम के वनगमन का प्रसंग अत्यन्त मार्मिक है इसकी मार्मिकता इतनी तीक्ष्ण है कि वह राम वनगमन से अपने वनगमन को या अपने निर्वासन को जोड़ते है। उन्हें भी ऐसा प्रतीत होता है कि जिस तरह राजा राम को एक दुष्ट आततायी से मुक्ति मिली और वे अपने घर लौट सके इसी तरह एक दिन हम लोग भी अपने घर लौटेंगे। यद्यपि आज भारतीय खुशहाल है परन्तु उनके मन में आज भी अपनी जड़ों की ओर लौटने की लालसा शेष है। गिरमिट प्रथा के द्वारा फिजी पहुँचे भारतीय भारत के समस्त सांस्कृतिक मूल्यों के आदर्श प्रतिनिधि है। फिजी का राष्ट्रीय पर्व है दीपावली। राम नवमी पर वहां की रामलीला भी एक मनोहारी, दर्शनीय अभिव्यक्ति है। फिजी की राम लीला और उसका भारतीय संस्कृति पर प्रभाव शोध की असीम सम्भावनायें रखता है।

(स)4. भारती की लोक चित्र शैलियों में राम कथा विषयक चित्र

भारत एक विशाल देश है। इसकी सभ्यता और संस्कृति इसके लोकांचलों में स्पदित होती है। लोकांचलों की अपनी एक विशेषता होती है। भारतवर्ष की प्रमुख लोक चित्र शैलियों में मधुबनी, उड़िया पट्ट शैली, चेरियार आदि का उल्लेख होता है। आदिवासी लोक चित्र शैलियों में राम कथा का चित्रांकन नहीं हुआ है। परन्तु लोक शैलियों के सभी रूपों में राम कथा का विस्तृत रेखांकन किया गया है। इन लोक चित्र शैलियों में राम कथा के बनाये गये चित्रों का संग्रह एवं इन पर शोध की असीमित सम्भावनायें है।

(स)5. भारत की लघु चित्र शैलियों में राम कथा विषयक चित्र

भारत में लघु चित्र शैलियों की अपनी एक विस्तृत परम्परा है। लघु चित्र शैलियों का विकास लोक संस्कारों की भूमि एवं भित्त चित्रों के आलिंगन से हुआ। लघु चित्र हमारे लोक संस्कारों से जुड़े हुये है। परन्तु जब सभ्यता का विकास आगे बढ़ा महाकाव्य, मिथक कथायें, राजे महाराजे आदि का प्रभाव कलाओं पर पड़ने लगा जब अभिव्यक्ति की एक परिस्कृत शैली विकसित हुई, जिसमें लघु चित्र शैलियां बनाई गयी। कुल्लू कांगड़ी मंडी से लेकर मेवाड़, मालवा, मुगल आदि अनेकानेक लघु चित्र शैलियों में सुन्दर और उत्कृष्ट चित्रों का सृजन हुआ। राजपूत युग और मुगल काल में जब साहित्य का प्रभाव ललित कला पर पड़ने लगा तक एक–एक कविता की पंक्ति पर कई–कई चित्र बनाये जाने लगे। बिहारी के दोहे इसी रूप में अत्यधिक प्रसिद्ध हुये। स्वतंत्र रूप से विकसित होते हुये चित्र कला को रामायण की चित्रात्मकता ने अत्यधिक प्रभावित किया। बालकाण्ड से लेकर उत्तर काण्ड तक अनेक प्रसंग ऐसे उपस्थित हुये जिन पर प्रत्येक रचनाकार अपनी क्षमता के अनुरूप विशिष्ट चित्रों का सृजन कर सकता था। इस परम्परा में राम कथा पर आधारित समृद्ध चित्रों की एक परम्परा विकसित हुई जो भारतवर्ष के सभी राज्यों के व्यक्तिगत एवं राजकीय संग्रहालयों में सुरक्षित है जिन पर शोध की असीमित सम्भावनायें है।

(स)6. भारत की लोक नाट्य परम्परा में राम–कथा

भारत की लोक नाट्य परम्परा अत्यन्त समृद्ध है इसमें राम लीला, रास लीला, नौटंकी, माचा, तमाशा, मणिपुरी रास, रशावतार, यक्षगान आदि की एक समृद्ध परम्परा आदि है जो आज भी जनमानस से आत्मीयता बनाये हुये है। उत्तर भारत की प्रसिद्ध नौटंकी शैली में आज भी हरिश्चन्द्र केन्द्रित पात्र के रूप में अभिव्यक्ति होती है। राजा हरिश्चन्द्र की कहानी सतयुग की कहानी है जो श्रीराम के पूर्वज थे। अयोध्या के राज श्रीराम की कथा पर आधारित राम लीला गाँव–गाँव में मंडलियां बनाकर खेली जाती है। राम लीला का प्रभाव भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी है। रूस, मारीशस, सूरीनाम, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया आदि देशों में राम लीला की समृद्ध प्रस्तुतियां होती है। दक्षिण भारत की सबसे समृद्ध लोक नाट्य शैली यक्षगान है जिसमें सैकड़ों वर्षों से राम कथा का मंचन यिका जा रहा है। यक्षगान में सभी पात्र पुरूष होते है जो कर्नाटक की विशिष्ट परम्परा के साथ ही साथ राम कथा की परम्परा को जीवन्त करती है। यह भी शोध की असीम सम्भावनाओं वाला एक विशिष्ट क्षेत्र है। अयोध्या में दो राम लीला मंडलियां प्रसिद्ध है–

1. श्री अवध आदर्श राम लीला, जिसके प्रबंधक है महन्त श्री जय राम दास व्यास, पत्थर मंदिर, वासुदेव घाट, अयोध्या। इनकी राम लीला पर काशी की राम लीला का प्रभाव मिलता है। महन्त श्री जय राम दास 8 पीढ़ी पूर्व काशी से प्रतिस्थापित होकर अयोध्या पहुँचे।
2. श्री साकेत आदर्श रामलीला मण्डल, जिसके प्रबंधक महन्त श्री त्रियुगी नारायण, राम की पैडी, नया घाट, अयोध्या। इनकी शैली अयोध्या की प्राचीन परम्परा से विकसित शैली है जिसमें आज भी कोई नारी अभिनेता के रूप में सम्मिलित नहीं है। नारी पात्र का अभिनय पुरूष पात्र करते है।

(स)7. भारत एवं विश्व के कथा मर्मज्ञों का संक्षिप्त परिचय

राम कथा जितनी बार भी और जिस रूप में प्रस्तुत होती है वह उतनी बार नई लगती है और दिल को छू जाती है। यह कौन सी विशेषता और काव्य शास्त्र के किन सिद्धान्तों के अनुरूप है इसका उत्तर आज तक कोई भी मनीषी या विद्वान नहीं दे सका है। राम कथा मर्मज्ञों में दो वर्ण मिलते है–

1. आस्थाशील प्रवचन कार्य एवं विचारक 2. अन्वेशक, शोधार्थी एवं अश्येता

दोनों वर्गों में एक लम्बी श्रृंखला प्राप्त होती है। भारत वर्ष में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त प्रवचनकारों में मोरारी बापू का नाम लिया जा सकता है। मानस मर्मज्ञ, पं0 राम किंकर जी का अयोध्या एवं राम कथा से अत्यन्त लगाव था। उनके स्वर्गवास के पश्चात उनकी कोटि का दूसरा प्रवचनकार मिलना मुश्किल है। अयोध्या की रामायणी परम्परा का संक्षिप्त उल्लेख ऊपर हो चुका है।

अन्वेषणकताओं ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 29 रामायण सम्मेलन सम्पन्न करवाये जाने का श्रेय अन्तर्राष्ट्रीय रामायण मेला समिति को जाता है। जिसके अध्यक्ष श्री लल्लन प्रसाद व्यास जी है जिनका नियमित प्रकाशन 'हिन्दी विश्व दर्शन' राम कथा पर केन्द्रित है। मध्य प्रदेश की स्वायत्तशासी संस्था 'तुलसी अकादमी' द्वारा नियमित 'मानव भारती' का प्रकाशन किया जाता है। इसके अतिरिक्त चित्रकूट श्रंगवेपुर की रामायण मेला समिति तथा प्रयाग के पंजावा राम पत्थरचट्टी राम लीला समितियों द्वारा भी दशहरे के शुभ अवसर पर राम कथा का विषद विवेचन किया जाता है। अयोध्या की रामायण मेला समिति द्वारा 21 रामायण मेलों का आयोजन किया जा चुका है। जिसके अध्यक्ष महन्त नृत्य गोपाल दास जी है जिनका समर्पण अयोध्या के लिये अप्रतिम है।